International Journal of Applied Research 2016; 2(5): 1123-1127

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2016; 2(5): 1123-1127
www.allresearchjournal.com
Received: 13-03-2016
Accepted: 21-04-2016

**शोभा कुमारी**
शोधप्रज्ञा, विश्वविद्यालय,
हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि.विवि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**शोभा कुमारी**
शोधप्रज्ञा, विश्वविद्यालय,
हिन्दी–विभाग, ल.ना.मि.विवि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

# 'विद्यापति–पदावली' में रेखा और रंगों का विश्लेषण

**शोभा कुमारी**

**सारांशः**
मिथिलांचलीय संस्कृति को पूर्णतः अपने में समाऐ हुए 'विद्यापति पदावली' में जीवन के विविध रंग हैं, विविध ढंग है। वहाँ जीवन की संपूर्णता अपने तमाम संदर्भों के साथ उपस्थित है। विद्यापति ने विविध मनोभावों को शब्द के माध्यम से संजोने का काम किया है। ये विविध मनोभाव चित्रकला की कसौटी पर भी व्यंजित होती हुई प्रतीत होती है। 'विद्यापति–पदावली' अनेक रेखाचित्रों से भरे पड़े हैं। इस रेखाचित्रों का मुख्य आधार कृष्ण–लीला–संबंधी चित्र, नायक–नायिका संबंधी प्रेम के संयोग एवं वियोग पक्ष के चित्र, नोंक–झोंक, समेत प्रकृति के बहुत सारे रूप हैं। विद्यापति ने अपने काव्य–लेखन के क्रम में यहाँ के लोक में फैली लोक–चित्र–कला की विविध शैलियों तथा रेखा और रंगों के वैविध्यमय प्रयोग का ध्यान अवश्य रखा होगा, तभी तो उनकी कविताएँ चित्रात्मकता से युक्त हो सकी हैं।

**प्रस्तावनाः**
'विद्यापति–पदावली' के शब्द–चित्रों में रेखा और जिस प्रकार की भावनाओं का अंकन हुआ है उसी प्रकार चित्रकारों ने उसे रेखा और रंगों के माध्यम से चित्रित किया है। विद्यापति की भावनाओं को जन सामान्य के बीच और भी चर्चित करने के निमित्त ही उसे चित्रांकन का रूप दिया जा रहा है, क्योंकि काव्य समझने की वस्तु है, परन्तु चित्र के साथ ऐसी बातें नहीं। उसे तो कम पढ़े–लिखे लोग भी समझ सकते हैं। क्योंकि कवि के शब्द– चित्रों की अपेक्षा चित्रकार के चित्रों से कहीं अधिक सूक्ष्मता होती है।
काव्य के शब्द–चित्रों में सम्वेदना के सूक्ष्मतिसूक्ष्म भाव को अंकित करने की क्षमता होती है, इसलिए वे अधिक संवेदनात्मक हो सकते हैं।[1] लेकिन चित्रकला में भी संवेगात्मकता अधिक होती है।
काव्य–चित्रों को दो श्रेणियों में रखा गया है– [2] (1) लक्षित चित्रयोजना और (2) उपलक्षित चित्रयोजना
रेखाचित्र में आलंबन के रूप सौन्दर्य और उसकी चेष्टाओं को चित्रित किया जाता है। लेकिन उपलक्षित चित्र–योजना के अन्तर्गत धनीभूत भावों को अप्रस्तुत के सादृश्य विधान द्वारा अभिव्यक्ति किया जाता है। लक्षित चित्रयोजना चेतन स्तर पर अंकित किया जाता है, लेकिन उपलक्षित चित्र योजना का संबंध अवचेतन मन से होता है। चेतन अचेतन मन का अंकन काव्य के माध्यम से भी होता है। चित्रकला में बाह्य रेखाओं पर आधारित चित्रों को रेखाचित्र की संज्ञा दी जाती है। लेकिन उसमें रंगों की संयोजना चित्रकला की पूर्णता को व्यंजित करती है।
लक्षित चित्रयोजना को दो वर्गों में रखा गया है– (1) रेखा–चित्र, (2) वर्ण–चित्र
चित्रकला का एक आवश्यक माध्यम रेखा है। सभ्यता के विकास के प्रथम चरण में ही रेखाओं के माध्यम से चित्र अंकित किये जाते थे। रंगों की संयोजना तो बाद में हुई होगी। 'चित्रसूत्रम्' में रेखा, लिखावट आदि की अपेक्षा रंग की भी चर्चा हुई है–

**"रेखा च वर्तना चैव भूषणं वर्ण मेवय।**
**विक्षेया मनुज श्रेष्ठ चित्र कर्मसु भूषणम्।।**[3]

चित्रकला के अन्तर्गत रेखांकन को तीन भागों में बाँटा गया ह [4]– (1) पत्र– वर्त्तना, (2) आहैरिक–वर्त्तना और (3) विन्दु–वर्त्तना
पत्र सदृश्य रेखाओं को पत्र वर्त्तना, अत्यंत सूक्ष्म रेखाओं को आहैरिक वर्त्तना एवं स्तम्भन मुक्त रेखाओं को विन्दु वर्त्तना कहा जाता है। इस प्रकार के रेखाओं के विभाजन को काव्य–चित्रों में खोजना कठिन है, परन्तु अन्तश्चेतना द्वारा ऐसे रेखांकित चित्रों का अनुभव किया जा सकता है। अस्पष्ट रेखाओं का अंकन चित्रकला के लिए दोष माना जाता है।[5]
काव्य में केवल स्थूल चित्रों का कोई साहित्यिक मूल्य नहीं होता, जब तक कि इन चित्रों की रेखाओं में शब्द, स्पर्श, गंध आदि का रंग नहीं भरा जाता है।[6]

रेखा की कोमलता और सूक्ष्मता के संबंध में जनेश्वर प्रसाद ने लिखा है ''चित्रों में रेखाओं के विभिन्न आकार या स्वरूप प्रयुक्त होते हैं, जिसका दर्शक को प्रत्यक्ष रूप में अथवा भौतिक बोध होता है। लेकिन रेखा के इस गुण से दर्शक पर विभिन्न प्रकार के प्रभाव या अनुभूतियाँ भी होती हैं, जो उनके सूक्ष्मता गुण का प्रतीक है। यह रेखाओं का ऐन्द्रिक नहीं वरन् मानसिक गुण है। इस तरह रेखाओं में दोनों गुण परस्पर इस प्रकार संयुक्त रहते हैं, कि उनमें पार्थक्य नहीं हो सकता, यदि रेखा में कोमलता के गुण को स्पष्ट करने की चेष्टा की जाय तो सूक्ष्मता के गुण स्वतः प्रकट हो जायेगा।'' [7]

मनोविज्ञान के अन्तर्गत इस बात की वृहद चर्चा हुई है कि विभिन्न ढंग के रेखांकनों के प्रत्यक्षीकरण से भिन्न–भिन्न मानसिक प्रभाव पड़ते हैं–

(1) हलकी रेखाएँ – कोमल भावनाओं के परिचायक है।
(2) अत्यन्त हलकी रेखाएँ – दौर्बल्य एवं अनिश्चितता।
(3) गहरी रेखाएँ – निकटता का परिचायक एवं दृढ़ता एवं आत्मविश्वास या दुराग्रह।
(4) सीधी खड़ी रेखाएँ – सादगी
(5) टेढ़ी–मेढ़ी रेखाएँ – कुटिलता
(6) बाधित रेखाएँ – विश्राम
(7) ऊर्ध्वगामी रेखाएँ – अत्थान का बोधक
(8) अधोगत रेखाएँ – अवनति, उदासी
(9) तिरछी रेखाएँ – परिमित शक्ति का परिचय
(10) वक्र रेखाएँ – रहस्य भावना का परिचायक

**रेखाएँ मानवाकृति के सन्दर्भ में–**

1. तिरछी रेखाएँ – क्रोध, भय
2. दिग्भ्रमित रेखाएँ – उन्माद
3. बहावदार तथा सीधी रेखाएँ – प्रेम
4. अद्योगत वक्र रेखाएँ – करूण
5. ऐंठन युक्त रेखाएँ – अभिमान
6. पड़ी रेखाएँ – दुखः, चिन्ता

इसके अतिरिक्त भी रेखाओं को मनोनुकूल तोड़–मरोड़कर भिन्न–भिन्न भाव–भंगिमाएँ बनायी जा सकती हैं।

''विद्यापति–पदावली' में रेखा चित्र भरे पड़े हैं। इस रेखा चित्रों का मुख्य आधार कृष्ण–लीला संबंधी चित्र, नायिका भेद संबंधी चित्र एवं प्राकृतिक घटाओं से संबंधित रेखा–चित्रों में देखा जा सकता है। यहाँ इसकी चित्रांकन प्रतिभा देखी जा सकती है। विरह विदग्ध नायिका का एक चित्र देखा जा सकता है।

**''माधव, तोहें जनु जाह बिदेस।**
**हमरो रंग रभस लए जएबह, लएबह कओन संदेस।।2।।[8]**

उपर्युक्त गीत में नायिका के भाव को रेखाचित्र में उतारा गया है। इस गीत में एक विशेष मुद्रा में बैठी नायिका का नायक को विह्वल होकर देखना, चित्र की अनेक भावनाओं, आशा, निराशा, राग–विराग, चिन्ता, भय, उत्कंठा को कुरेद देता है।

**''ए सखि पेखलि एक अपरूप। सुनइत मानव सपन–सरूप।।2।।**
**कमल जुगनल पर चाँदक माला। तापर उपजल तरून–तमाला।।3।।**
**तापर बेढ़लि बीजुरि–लता। कालिनदी तट धिरे–धिरे जाता।।4।।**
**साखा–सिखर सुधाकर पाँति। ताहि नब पल्लब अरूनिम काँति।।5।।**
**बिमल बिम्बफल जुगल विकास। तापर कीर थीर करू बास।।6।।**
**तापर चंचल खंजन–जोर। तापर साँपिनि झाँपल मोर।।7।।**
**ए सखि रंगिनि कहल निसान। हेरइत पुनि मोर हरल गेआन।।8।।**
**कवि विद्यापति एह रस भान। सुपुरूख मरम तोहें भल जान।।9।।**
**[9]**

उपर्युक्त गीत में कृष्ण का सम्पूर्ण रूप उभर कर हमारे सामने उपस्थित हो जाता है। इसमें भी कई सबल रेखाएँ अंकित की गई हैं, अर्थात्–

1. सिर पर मोर मुकुट
2. गले में वनमाला
3. श्याम शरीर पर पीतांबर

**''ससन–परस खसु अम्बर रे, देखल धनि देह।**
**नव जलधर–तर चमकए रे, जनि बिजुरी – रेह।**
**आज देखलि धनि जाइत रे, मोहि उपजल रंग।**
**कनकलता जनि संचर रे, महि निर अबलम्ब।**
**ता पुन अपरूब देखल रे, कुच–जुग अरबिन्द।**
**बिगसित नहि किछु कारन रे, सोझाँ मुख चन्द।**
**विद्यापति कवि गाओल रे, रस बुझ रसमन्त।**
**देवसिंह नृप नागर रे, हासिनि देइ कन्त।[10]**

नायिका के गुप्त सौन्दर्य का एक चित्र विद्यापति के इस गीत में देखा जा सकता है, जहाँ कई लघु रेखाओं से एक पूर्ण चित्र का निर्माण किया गया है–

1. नायिका का स्वच्छंद होकर चलना।
2. हवा के स्पर्श से देह पर से वस्त्र का गिरना।
3. वस्त्र हटने से स्तनों की शोभा दिखाई पड़ना।
4. देख कर नायक का मन हर्षित होना।

सम्पूर्ण 'विद्यापति–पदावली' ही रेखा चित्रों से भरी पड़ी है। इसके प्रत्येक गीत में लघु रेखाओं के योग से एक पूर्ण चित्र बनाया जा सकता है। जिसमें भाव–अनुभाव आदि सभी कुशलता पूर्वक अंकित किए जा सकते हैं। विद्यापति के काव्यगत् चित्रों में रेखाओं का सम्मिश्रण अत्यधिक साफ, नपातुला तथा प्रभावोत्पादक है। उनके चित्र केवल रेखाचित्र मात्र न रहकर विशेष भावों की अभिव्यक्ति के माध्यम बन गए हैं। इनके गीत इसके साक्षात् प्रमाण है।

**वर्ण (रंग) चित्रः**

जिन लघु रेखाओं से रेखाचित्रों का अंकन किया जाता है, उसमें रंगों का संयोजन भी आवश्यक होता है। वैसे तो रेखा से निर्मित चित्र भी पूर्ण कहा जा सकता है, परन्तु चित्रों के लिए 'रंग' भी एक ऐसा उपादान है, जो आवश्यकतानुसार भर कर चित्रों में सजीवता प्रदान की जाती है। भाव–व्यापार का संयोजन भी रंगों के आधार पर ही दिखाया जा सकता है। डॉ॰ बच्चन सिंह ने लिखा है– ''रंग योजना में कवि का अभिप्राय केवल रंग–योजना ही नहीं, बल्कि इसके द्वारा भावों की अभिव्यक्ति करना तथा इन्हें पाठकों तक प्रेषणीय बनाना है।'' [11] भाषा में जो स्थान स्वर को मिला है, वही स्थान चित्र में रंग को दिया जाता है। अर्थात् कहा जा सकता है कि विभिन्न रंगों के संयोजन से चित्रकला में लावण्यपूर्ण भाषा का संयोजन किया जाता है। दर्शक के मन पर रंग का गहरा असर पड़ता है। ''रंगीन उपकरणों से कवि परिष्कृत रूचि सम्पन्न पाठक एक प्रकार के रोमांच का अनुभव करते हैं।'' [12] अतः कविताओं में भी रंग–संयोजन एक आवश्यक उपादान माना गया है। वाक्य में रंग–योजना रंगों का नामोल्लेख नहीं है, बल्कि इसके द्वारा व्यक्त भावों की अभिव्यक्ति करना तथा इन्हें पाठक तक प्रेषणीय बनाना है।[13] भावों की समृद्धि के लिए रंगों का प्रयोग किया जाता है। इसलिए कलाकारों ने विभिन्न भावों को विभिन्न रंग माना है, साथ ही रंग– ध्यान से शारीरिक अवयवों की परिशुद्धि भी मानी जाती है, क्योंकि यह अधिक प्रत्यक्ष अधिक सरल और अधिक स्पष्ट है। रंग विज्ञान के ज्ञाता जानते

हैं कि सूर्य किरणों सें सात रंग उत्पन्न होते हैं। उनमें से जो पदार्थ जिस रंग किरण को जिस अनुपात में ग्रहण करता है, वह उसी रंग का दिखने लगता है। रंग 'स्वाभाविक' या 'कृत्रिम' सभी इसी आधार पर विनिर्मित होते हैं, और परिणाम उत्पन्न करते हैं। [14]

भरत के 'नाट्यशास्त्र' में स्वाभाविक चार रंग माने गये हैं [15]– श्वेत, नीला, पीला और लाल। इन चारों के मिश्रण से अनेक रंग बनाए जाते हैं। ''विष्णुधर्मोत्तर पुराण'' के 'चित्रसूत्रम्' में प्रमुख पाँच रंगों की चर्चा हुई है [16]– श्वेत, पीला, पीलापन लिए हुए श्वेत, काला एवं नीला। परन्तु आधुनिक मान्यता के अनुसार मौलिक अथवा प्राथमिक रंग तीन माने गए है [17]– लाल, पीला और नीला। दूरदर्शन पर प्रसारित यू.जी.सी. कार्यक्रम [18] के अन्तर्गत भी तीन रंगों को प्राथमिक रंग माना गया है।

किसी भी काल की चित्रकला का विश्लेषण उस समय के आलोक में किया जा सकता है। चाहे वह अजन्ता की चित्रकला हो, राजपूत चित्रकला हो अथवा मिथिला लोक चित्रकला हो। सभी में रंगों का प्रयोग विभिन्न प्रकार से हुआ है।

जिस प्रकार चित्रकारों ने रंगों के प्रयोग से चित्र में लावण्यता प्रदान करने की कोशिश की है, उसी प्रकार कवियो ने अपनी लेखनी से कविताओं में रंगों का संयोजन कर चित्रात्मकता प्रदान की है। 'विद्यापति पदावली' में रंगों की स्थिति देखकर उसे तीन वर्गों में रखा जा सकता है–

(1) अनुरूप वर्ण–योजना,
(2) विरोधी वर्ण–योजना और
(3) मिश्रित वर्ण–योजना।

**(1) अनुरूप वर्ण–योजनाः**

जहाँ मिलते हुए रंगों का प्रयोग होता है, वहाँ अनुरूप वर्ण–योजना कहा जाता है। रंगों के ऐसे प्रयोग से काव्य चित्रों में लावण्यता लाई जाती है। राजकवि होने के कारण राजसी माहौल के बीच रहने वाले महाकवि विद्यापति को रंगों का पूर्ण ज्ञान था, ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। विद्यापति ने अंग–प्रत्यंग की योजना में अधिकतर अनुरूप वर्ण का ही प्रयोग किया है–

**''जाइत पेखलि नहाएति गोरी, कत सएँ रूप धनि आनल चोरी।**
**के निगारइत बह जल–धारा, चमर गरए जनि मोतिम–हारा।**
**तीतल अलक बदन अति सोभा, अतिकुल कमल बेढ़ल मधु लोभा।**
**वीर निरंजन लोचन गता, सिंदुर मंडित जनि पंकज–पाता।**
**सजल चीर रह पयोधर–सीमा, कनक–बेल जनि पड़ि गेल हीमा।**
**तूल कि करइते चाहे के देहा, अबहि छोड़ब मोहि तेजब नेहा।**
**ऐसन रस नहि पाओब आरा, इथे लागि रोइ गरए जलधारा।**
**विद्यापति करि सुनह मुरारी, बसन लागल भाव रूप निहारि।'' [19]**

नायिका का शरीर गोरा है, अर्थात् पीतवर्ण का है। उस गोरे शरीर पर श्वेत महीन साड़ी बहुत फबती है, ऐसा लगता है, जैसे जल–समान चादर उपस्थित हो गयी है।

**विरोधी वर्ण–योजनाः**

**''कुंकुमे लओलह नख–खत गोइ, अधरक काजर अएलह धोइ।**
**तइयो न छपल कपट–बुधि तोरि, लोचन अरून बेकत भेल चोरि।**
**चल–चल कान्ह बोलह जनु आन, परखत चाहि अधिक अनुमान।**
**जानओ प्रकृति बुझओं गुनशीला, जल तोर मनोरथ मनसिज–लीला।**
**बचन नुकाबह बेकतओ काज, तोहें हँसि हेरह मोहि बड़ लाज।**
**अपधहु सपथ बुझाबह राधे, कोन परि खेमओ सठ अपराधे।**
**भनइ विद्यापति पिअ अपराध, उदघट न कर मनोरथ साध।'' [20]**

रंगो की प्रभाव से नायक के मनोभावों को नायिका तुरन्त समझ जाती है। यहाँ तीन रूपों में रंगों का प्रयोग हुआ है–

(1) पलकों पर कुंकुम,
(2) अधरों पर काजल और
(3) भाल पर लगा हुआ महाबर।

नायिका ने इन चिह्नों से नायक की पूरी स्थिति समझ ली –

(1) पलकों में कुंकुम अर्थात् सौत ने उसके नेत्र चूमें होंगे। अथवा रात भर जगने के कारण उसकी आँखें लाल हो गई होंगी।
(2) नायक ने उसकी सौत के नेत्र चूमें होंगे, जिसके कारण उसके होठों में काजल लग गया होगा।
(3) रति के लिए उसने उसके चरणों में अपना माथ लगाया होगा, इसलिए उसके माथे पर महाबर का गुलाबी रंग लग गया होगा।

अतः लाल, काला और गुलाबी रंगों के संकेत से नायिका तुरन्त समझ जाती है कि नायक ने किसी दूसरी नायिका के साथ रातें बिताई है। कवि ने यहाँ भी रंगों की संयोजना से नायक–नायिका का वास्तविक चित्र खींचा है। कहीं–कहीं तो नायक के हृदय में लाल रंग देखकर नायिका की आँखें लाल हो जाती हैं [21]।

विरोधी वर्ण–योजना का एक चित्र यहाँ देखा जा सकता है–

**''गगन अब धन मेह दारून, सघन दामिनि झलकई।**
**कुलिस पातन सबद झनझन, पवन खरतर बलगई।**
**सजनी आजुदुरदिन भेल।**
**कंत हमर नितांत अगुसारी संकेत कुंजहि गेल।**
**तरल जलधर बरिख झरझर, गरज धन घनघोर।**
**साम नागर कइसे एकसर, पंथ हेरए मोर।**
**ई मोर गुरुजन नयन दारुन, घोर तिमिरहि झाँप।**
**तुरित चल अब किए बिचारसि, जिबन हरि अनुसार।**
**कबीर सेखर बचन अभिसर, किए से बिधिन–विथार।[22]**

यहाँ सघन कुंज है, बादल छा रहे हैं तथा अँधेरी रात है, फिर भी दीप शिखा सी देह वाली राधा का सौंदर्य अप्रतिम मालूम पड़ रहा है। यहाँ–

(1) सघन कुंज – काला
(2) बादज – काला
(3) अंधेरी रात – काला
(4) राधा का शरीर – स्वर्णिम

इस कालिमा के समिश्रण में दीप शिखा–सी ज्योति वाली राधा कैसे छिप सकती है।

**''चाँद सार लय मुख घटना, करू, लोचन चकित चकोरे।**
**अमिअ धोए आँचर धनि पोछल, दह दिसि भेल उँ जोरे।**
**कामिनि कओने गढ़ली।**
**रूप सरूप हमे कहए न परिअ, लोचन लागि रहली।**
**भाँगि जाएत मनसिज धरि राखलि, त्रिबलि लता अरुराई।**
**भनइ विद्यापति अद्भुत कौतुक, ई सब बचन सरूपे।**
**रूपनराएन ई रस जानथि, सिवसिंह मिथिला भूपे।'' [23]**

गोरे अंगों पर आँचल अत्यधिक सुशोभित हो रहा है, मुख चन्द्रमा के समान झिलमिल हो रहा है। यहाँ नायिका के रूप की तुलना चन्द्रमा से भी की है। अर्थात् –

नायिका का मुख = चन्द्रमा – गोरा
आँचल = यमुना – नील वर्ण

अतः नील वर्ण यमुना में चन्द्रमा की शोभा विरोधी वर्ण योजना के कारण ही हुई है।

विद्यापति ने कहीं महीन कपड़ों के भीतर से झिलमिलाते गहनों का चित्र खींचा है, तो कहीं गोरी नायिका के गले में पान की

पीक स्पष्ट दिखाई पड़ती है। कही शशिमुखी नायिका नीले रंग की चुनरी ओढ़े है, तो कहीं नायिका के सुन्दर मुख में रक्तरंजित अधर सुशोभित हो रहे हैं। यहाँ भी विरोधी वर्ण–चेतना देखी जा सकती है।

राधा गोरी है एवं कृष्ण काले हैं, अतः दोनों की युगल छवि में भी विरोधी रंगों का संयोग हुआ है। अतः विरोधी वर्ण–योजना में आने–वाले मुख्य रंग हैं– (1) काला, (2) उजला, (3) पाली और (4) नीला।

### (3) मिश्रित वर्ण–योजनाः

विभिन्न रंगों के मिश्रण से भी कविता कामिनी को सजाया जाता है। मिश्रित वर्ण योजना से सम्बन्धित पद वही लिख सकता है, जो रंगों के अनुपात को अच्छी तरह समझ सकता है। विद्यापति को रंगों का पूर्ण ज्ञान था, इसमें कोई संदेह नहीं। अतः उनकी 'पदावली' में विभिन्न रंगों के मिश्रण की कला विशेष रूप से दिखलायी पड़ती है। वर्ण–मिश्रण के सम्बन्ध में डॉ. बच्चन सिंह ने लिखा है[24]– ''वर्णों के मिश्रण में कवि को दुहरे दायित्व का निर्वाह करना पड़ता है। एक ओर उसे चित्र विशेष दूसरी ओर रंगों के आनुपातिक मिश्रण पर भी ध्यान देना पड़ता है।''

**''देख देख राधा रूप अपार।**
**अपरुष के बिहि आन मेराओल,**
**खिति–तिल लावनि सार**
**अंगहि अंग अनंग मुरछाएत,**
**हेरए पड़ए अधीर।**
**कत–कत लखिमि चरन–तल नेओछए,**
**रंगिनी हेरि भोरि।**
**करू अभिलाख मनहि पदपंकज**
**आहनिसि कोर अगोरि।''** [25]

प्रस्तुत पद में कवि का रंगों के मिश्रण का सूक्ष्म ज्ञान भी स्पष्ट हो जाता है–

राधा गोरी है, और कृष्ण काले अर्थात्
गोरा – पीला वर्ण
हरा वर्ण
काला – नीला वर्ण

यहाँ एक प्राथमिक रंग एवं एक सहायक रंग का संयोजन हुआ है, जिसके परिणाम में हरा रंग प्राप्त होता है। हरा रंग शीतलता प्रदान करता है, तथा हरियाली खुशी का प्रतीक भी माना जाता है। राधा के संसर्ग में आते ही कृष्ण हरे हो जाते हैं, अर्थात् प्रसन्न हो जाते हैं। अतः कवि ने यहाँ रंगों का प्रयोग कर राधा एवं कृष्ण के मधुर भावों का अंकन किया है।

**''ए सखि पेखलि एक अपरूप, सुनइत मानव सपन–सरूप।**
**कमल जुगल पर चाँदक माला, तापर उपजल तरून–तमाला।**
**तापर बेढ़लि बीपुरि–लता, कालिन्दी तट धिरें–धिरें जाता।**
**साखा–सिखर जुगल विकास, तापस कीर शीर करू बास।**
**तापर चंचल खंजन–जोर, तापर साँपिनि झाँपल मोर।**
**ए सखि रंगिनि कहल निसान, हेरइत पुनि मोर हरल गेआन।**
**कवि विद्यापति एह रस भान, सुपुरुख भरम तोहें भल–जान।''** [26]

उपर्युक्त पदों का रंग–विश्लेषण इस प्रकार है–

ओठ – लाल
दृष्टि – श्वेत
पीताम्बर – पीला = इन्द्रधनुष
कृष्ण का रंग – श्याम/नीला
मुकुट (मोर) – हरा

इन सभी रंगों के मिलने से इन्द्रधनुषी आभा दिखाई पड़ती है। अतः कवि ने बड़ी सूझ–बूझ से इन रंगों का संयोग किया है। हरा सहायक रंग, लाल प्राथमिक रंग, श्वेत तथा काला उदासीन रंग, मिलने से इन्द्रधनुषी छटा दिखाई पड़ती है।

रेखा, और रंगों की दृष्टि से विद्यापति पदावली शीर्ष स्थान पर है। इनके अधिकतर पदों में रेखा और रंगों के अनुपम उदाहरण हैं। उन्होंने पीला, लाल, नीला और उजले रंग का अधिक प्रयोग किया है। 'पदावली' के आधार पर रंगों की शब्दावली इस प्रकार दी जा सकती है–

**(1) नीला** – स्वर्णिम, दीपशिखा, गोरे मुँह, केशर पीत पट, चम्पक भाल, पीताम्बर आदि।

**(2) नीला** – आँचल, नीला आकाश, नीली चुनरी आदि।

**(3) लाल** – महाबर, बिम्बफल, मधुरी फूल आदि।

**(4) श्वेत** – गोरे बदन, श्वेत वस्त्र उज्जवल जल आदि।

**(5) काला** – श्याम, अंधियारी रात, बाल, अंजन, कालिन्दी, परछाई, घन वन आदि।

इसके अतिरिक्त हरा, केशरिया, धूप–छाँह जैसे रंगों का प्रयोग भी कवि ने किया है।

इस प्रकार से 'पदावली' के शब्द चित्रों में रेखा और रंगों का समुचित संयोजन हुआ है। अतः रेखा और रंग 'पदावली' की सबसे बड़ी विशेषता है।

### निष्कर्षः

विद्यापति पदावली के शब्द–चित्रों में रेखा और रंग के प्रयोग से विविध भावों की अभिव्यक्ति की गई है। विद्यापति पदावली में अनेक प्रकार की भावनाएँ व्यंजित हुई हैं। उसमें मिथिलांचल को संपूर्ण जीवन और उसकी गतिविधि का समावेश किया गया है। काव्य में शब्द–चित्रों के माध्यम से भावों को अभिव्यक्ति दी जाती है, वहीं चित्रकला मेंवही काम रेखा और रंगों के वैविध्यमयी प्रयोग से संभव हो पाता है। विद्यापति–पदावली में रेखा चित्र भरे पड़े हैं। इस रेखाचित्रों का मुख्य आधार कृष्ण–लीला संबंधी चित्र, नायक–नायिका भेद संबंधी चित्र तथा अनेक प्राकृतिक घटनाओं के चित्र संयोजित हैं।

### सन्दर्भ–सूचीः


1. जयसिंह नीरज – राजस्थानी चित्रकला और कृष्ण काव्य, पृ. सं. – 111
2. डॉ. बच्चन सिंह – रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, पृ. सं.–383
3. चित्रसूत्रम – 10/3/42
4. चित्रसूत्रम – 5/6/41
5. चित्रसूत्रम – 48/41/1
6. डॉ. बच्चन सिंह – रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, पृ.–384
7. जनेश्वर प्रसाद – रीतिकालीन श्रृंगारिकता एवं ललित कलाएँ – पृ.–173–74
8. विद्यपति पदावली–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ. सं. 220, पद सं.–188
9. विद्यापति–पदावली, रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–70, पद सं.–36
10. विद्यपति पदावली–रामवृक्ष बेनीपुरी, पृ.–61, पद सं.–29
11. डॉ. बच्चन सिंह, रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, पृ. –39.
12. डॉ. श्याम भाष्कर परमार – आलोचना, 28 हिन्दी काव्य में रंग तत्त्व, पृ.–51.
13. जयसिंह नीरज – राजस्थानी चित्रकला ओर कृष्ण काव्य, पृ. सं. – 146.
14. अखण्ड ज्योति, नवम्बर, 88, पृ.–43.

15. आचार्य भरत – नाट्यशास्त्र, अध्याय–21.
16. चित्रसूत्रम – 40/16.
17. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – चित्रकला का रसास्वादन, पृ.–84.
18. अप्रैल माह, 1989 में दूरदर्शन द्वरा प्रसारित यू.जी.सी. के अन्तर्गत कार्यक्रम के अनुसार।
19. विद्यापति पदावली – रामबृक्ष बेनीपुरी, पद सं.–25, पृ.–58.
20. विद्यापति पदावली – रामवृक्ष बेनीपुरी, पद सं.–134, पृ.–134.
21. वही, पद सं.–133, पृ.–164.
22. वही, पद सं.–112, पृ.–142.
23. वही, पद सं.–47, पृ.–14.
24. डॉ. बच्चन सिंह, रीतिकालीन कवियों की प्रेम व्यंजना, पृ. –247.
25. विद्यापति पदावली, रामवृक्ष बेनीपुरी, पद सं.–2, पृ.–34.
26. विद्यापति पदावली, रामवृक्ष बेनीपुरी, पद सं.–36, पृ.–36.